

(A No. 124) आज के समय की मांग: कृषि अर्थशास्त्र विषय के विशेषज्ञ हों कृषि विज्ञान केन्द्रों (KVK) में

भूपेंद्र कुमार

कृषि अर्थशास्त्र विभाग

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

परिचय:

भारत में कृषि सदियों से केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि जीवनशैली और संस्कृति का आधार रही है। लेकिन, पिछले कुछ दशकों में कृषि का परिदृश्य तेजी से बदला है। आज किसान को मौसम की अनिश्चितता से लड़ने के साथ-साथ बाज़ार की अस्थिरता, बढ़ती लागत और लाभ में कमी जैसी बड़ी आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन जटिल आर्थिक समस्याओं का समाधान केवल फसल उत्पादन बढ़ाने से नहीं हो सकता; इसके लिए कृषि को व्यवसाय और अर्थशास्त्र की नज़र से देखना होगा।

इसी संदर्भ में, देश के ग्रामीण विकास और कृषि विस्तार की धुरी माने जाने वाले कृषि विज्ञान केन्द्रों (Krishi Vigyan Kendras - KVK) की भूमिका में एक महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता है। इन केन्द्रों में तकनीकी विशेषज्ञता तो प्रचुर मात्रा में है, लेकिन कृषि अर्थशास्त्र (Agricultural Economics) के विशेषज्ञों की कमी एक बड़ी बाधा बन रही है। वर्तमान समय की मांग है कि KVK में कृषि अर्थशास्त्रियों की नियुक्ति अनिवार्य की जाए, ताकि किसान को केवल उन्नत बीज और तकनीक ही नहीं, बल्कि बाज़ार, लागत प्रबंधन और मुनाफा कमाने का वैज्ञानिक ज्ञान भी मिल सके।



I. KVK और कृषि विस्तार की वर्तमान सीमाएँ

KVK, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के तहत कार्यरत एक ज़िला स्तरीय संस्था है, जिसका मुख्य उद्देश्य नई कृषि तकनीकों को किसानों के खेतों तक पहुँचाना है। वर्तमान में, KVK मुख्य रूप से कृषि विज्ञान, पशु विज्ञान, पादप संरक्षण और गृह विज्ञान जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

1. तकनीकी ज्ञान पर अत्यधिक ज़ोर

KVK के विशेषज्ञ मुख्य रूप से **उत्पादन-उन्मुख (Production-Oriented)** सलाह देते हैं:

- किस मिट्टी में कौन-सी फसल उगाएँ?
- कौन-सा बीज सबसे अच्छा है?
- कीटों से कैसे बचाव करें?
- पशुओं को कैसे स्वस्थ रखें?

2. आर्थिक पहलुओं की उपेक्षा

यह दृष्टिकोण तब तक तो सफल रहा जब तक किसानों का मुख्य उद्देश्य केवल उत्पादन बढ़ाना था। लेकिन आज, जब किसान को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल रहा है, तो उसे इन सवालों के जवाब चाहिए:

- मेरी फसल की उत्पादन लागत (Cost of Cultivation) क्या है?
- मुझे किस बाज़ार में बेचना चाहिए, ताकि अधिकतम लाभ हो?
- खेती को अधिक लाभदायक व्यवसाय कैसे बनाया जाए?
- बाज़ार के जोखिमों (Market Risks) को कैसे प्रबंधित करें?

इन आर्थिक और व्यावसायिक प्रश्नों का वैज्ञानिक उत्तर देने के लिए **कृषि अर्थशास्त्री** ही सबसे उपयुक्त विशेषज्ञ हैं। वर्तमान में, KVK में अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों की कमी के कारण, किसान को अक्सर **"क्या उगाएँ"** का जवाब तो मिल जाता है, लेकिन **"कैसे बेचें और कितना कमाएँ"** का जवाब नहीं मिलता।

II. कृषि अर्थशास्त्री KVK में क्यों आवश्यक हैं? (समय की मांग)

KVK में कृषि अर्थशास्त्री की नियुक्ति भारतीय कृषि की जटिल समस्याओं को हल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

1. लागत विश्लेषण और मुनाफा बढ़ाना (Profitability Enhancement)

आजकल किसानों के लिए सबसे बड़ी चुनौती बढ़ती हुई उत्पादन लागत है।

- **वैज्ञानिक लागत विश्लेषण:** कृषि अर्थशास्त्री किसानों को उनकी फसलों की प्रति इकाई उत्पादन लागत की गणना करना सिखाते हैं। यह ज्ञान किसानों को अनावश्यक खर्चों को कम करने और संसाधनों (खाद, पानी, श्रम) का अधिकतम उपयोग करने में मदद करता है।
- **फसल विविधीकरण (Crop Diversification):** अर्थशास्त्री बाजार की मांग और भविष्य की कीमतों का विश्लेषण करके किसानों को पारंपरिक फसलों के बजाय अधिक लाभ देने वाली फसलों (जैसे बागवानी, औषधीय पौधे, या उच्च मूल्य वाली सब्जियाँ) की ओर जाने की सलाह दे सकते हैं।
- **जोखिम प्रबंधन:** किसान को बीमा, वायदा बाजार (Futures Market) और मूल्य गारंटी योजनाओं की सही जानकारी देकर आर्थिक जोखिम को कम करने में मदद करते हैं।

2. बाजार खुफिया और विपणन रणनीति (Market Intelligence and Marketing Strategy)

उत्पादन के बाद सबसे बड़ा युद्ध बाजार में लड़ा जाता है।

- **बाजार मूल्य निर्धारण की समझ:** अर्थशास्त्री किसानों को सिखाते हैं कि कृषि उत्पाद की कीमतें कैसे निर्धारित होती हैं (मांग-आपूर्ति, सरकारी नीतियाँ, निर्यात)।
- **विपणन चैनल का चुनाव:** वे किसानों को स्थानीय मंडियों, सहकारी समितियों, सीधे उपभोक्ताओं (Farm to Consumer), एग्री-टूरिज्म या ई-नाम (e-NAM) जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म में से सबसे अधिक लाभदायक चैनल चुनने में मार्गदर्शन करते हैं।
- **मूल्य संवर्धन (Value Addition):** अर्थशास्त्री किसानों को यह सलाह देते हैं कि फसल कटाई के बाद उन्हें तुरंत बेचने के बजाय, उसे साफ़ करके, ग्रेडिंग करके या प्राथमिक प्रसंस्करण (Drying, Grinding, Packaging) करके कैसे बेचा जाए, ताकि उत्पाद का मूल्य और मुनाफा बढ़ जाए।

3. कृषि उद्यमिता और वित्तपोषण (Agri-Entrepreneurship and Finance)

आज की कृषि को सफल बनाने के लिए उसे एक उद्यम के रूप में संचालित करना होगा।

- **व्यवसाय मॉडल तैयार करना:** कृषि अर्थशास्त्री छोटे किसान उत्पादक संगठनों (FPO) या व्यक्तिगत किसानों को डेयरी, पोल्ट्री, मशरूम उत्पादन, या खाद्य प्रसंस्करण जैसे कृषि व्यवसायों के लिए व्यवसाय योजनाएँ (Business Plans) बनाने में मदद कर सकते हैं।
- **सरकारी योजनाओं का लाभ:** अर्थशास्त्री सरकारी सब्सिडी, ऋण योजनाओं (जैसे किसान क्रेडिट कार्ड, पशुधन योजना) और अनुदानों की जटिलताओं को सरल भाषा में समझाकर किसानों को उनका अधिकतम लाभ उठाने में मदद करते हैं।

- **रिकॉर्ड-कीपिंग और लेखा-जोखा:** वे किसानों को आय-व्यय का उचित लेखा-जोखा (Bookkeeping) रखना सिखाते हैं, जो किसी भी सफल व्यवसाय के लिए आवश्यक है।

III. कृषि अर्थशास्त्री की भूमिका और कार्यक्षेत्र

KVK में कृषि अर्थशास्त्री की नियुक्ति होने पर उनका कार्यक्षेत्र केवल सैद्धांतिक कक्षाओं तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह व्यावहारिक और ज़मीनी स्तर पर होगा।

भूमिका का क्षेत्र	कृषि अर्थशास्त्री के मुख्य कार्य
प्रबंधन और वित्त	छोटे-बड़े कृषि व्यवसायों (डेयरी, बकरी पालन) के लिए परियोजना रिपोर्ट बनाना। किसानों को वित्तीय अनुशासन और ऋण प्रबंधन सिखाना।
बाज़ार हस्तक्षेप	स्थानीय मंडियों के मूल्य डेटा का संग्रहण और विश्लेषण । किसानों को भंडारण, कोल्ड स्टोरेज और उपज को सही समय पर बेचने की सलाह देना।
नीतिगत फ़ीडबैक	ज़िले में कृषि-अर्थव्यवस्था की समस्याओं पर शोध करना और स्थानीय प्रशासन तथा ICAR को नीतिगत सुधार के लिए सुझाव भेजना।
प्रशिक्षण और विस्तार	एफपीओ (FPO) के सदस्यों को विपणन कौशल, मोलभाव की कला (Negotiation Skills) , और बाज़ार की मांग के अनुरूप उत्पादन करने का प्रशिक्षण देना।
मूल्य संवर्धन	किसानों को प्रसंस्करण इकाइयों (Processing Units) की व्यवहार्यता (Feasibility) समझाना और उन्हें स्थापित करने में मदद करना।

IV. आगे की राह और नीतिगत बदलाव

KVK को सही मायने में "ज्ञान-बाज़ार-केन्द्र" बनाने के लिए नीतिगत स्तर पर बदलाव आवश्यक हैं।

1. पदों का सृजन और अनिवार्यता

भारत सरकार (ICAR) को सभी KVK में 'कृषि अर्थशास्त्र एवं विस्तार' के विशेषज्ञ पद को अनिवार्य करना चाहिए। इन पदों पर अनुभवी और ज़मीनी स्तर पर काम करने की क्षमता रखने वाले अर्थशास्त्र स्नातकों की नियुक्ति होनी चाहिए।

2. पाठ्यक्रम का आधुनिकीकरण

KVK के प्रशिक्षण और प्रदर्शन (Demonstration) कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम में **आर्थिक साक्षरता, बाज़ार सूचना प्रणाली, ई-कॉमर्स (E-commerce)** और **ग्रामीण वित्त** जैसे विषयों को प्रमुखता से शामिल किया जाना चाहिए।

3. डेटा और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग

Kisan Gazette Published By:

Society for Diversified Agriculture and Rural Development (Regd. Society)

Page 16

पता: ए-19, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद — केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान, संस्थान, करनाल, हरियाणा — 132001

www.kisangazette.in



कृषि अर्थशास्त्रियों को किसानों को **डिजिटल इंडिया** का लाभ उठाने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। इसमें कृषि-संबंधित ऐप्स, मौसम और बाज़ार पूर्वानुमान (Forecasting) डेटा का विश्लेषण और ऑनलाइन विपणन की जानकारी शामिल है।

निष्कर्ष

आज भारतीय कृषि एक ऐसे **चौराहे** पर खड़ी है जहाँ उसे केवल **हरित क्रांति** की नहीं, बल्कि **आर्थिक क्रांति** की आवश्यकता है। किसान को अब केवल **"उत्पादक"** के रूप में नहीं, बल्कि एक सफल **"उद्यमी"** के रूप में सशक्त बनाना होगा। कृषि विज्ञान केन्द्र, इस परिवर्तन की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण संस्था बन सकते हैं, बशर्ते उन्हें सही **"दिमाग"** (अर्थशास्त्री) से लैस किया जाए।

KVK में कृषि अर्थशास्त्री की नियुक्ति केवल एक प्रशासनिक फेरबदल नहीं, बल्कि **किसान को बाज़ार से जोड़ने, जोखिम को कम करने और उसकी आय को दोगुना करने** के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में उठाया गया एक **अपरिहार्य (Indispensable) और निर्णायक कदम** होगा। यह समय की मांग है और ग्रामीण भारत के उज्जवल भविष्य की नींव है।

कृषि विज्ञान की मासिक पत्रिका

किसानगज़ट